

अथ रविवार की आरती

कहुँ लगी आरती दास करेंगे ,सकल जगत जाकी जोत बिराजेसात ॥  
समुद्र जाके चरणनि बसे , कहा भयो जल कुम्भ भरे हो राम ।  
कोटि भानु जाके नख की शोभा ,कहा भयो मन्दिर दीप धरे हो राम ।  
भार अठारह रामा बलि जाके , कहा भयो षिर पुशपधरे हो राम ।  
छप्पन भोग जाके नितप्रति लागे, कहा भयो नैवेद्य धरे हो राम ।  
अमित कोटि जाके बाजा बाजे ,कहा भयो झनकार करे हो राम ।  
चार वेद जाके मुख की षेभा ,कहा भयो बह्य वेद पढे हो राम ।  
षिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक ,नारद हुनि जाको ध्यान धरें हो राम ।  
हिम मंदार जाको पवन झकोरे ,कहा भयो षिव चवँर दुरे हो राम ।  
लख चैरासी वन्दे छुड़ाये ,केवल हरियष नामदेव गाये ॥ हो राम ॥